इकाई 8 सारानुवाद और संक्षिप्तानुवाद

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 सारानुवाद

8.2.1 सारानुवाद से तात्पर्य

8.2.2 सारानुवाद की आवश्यकता

8.3 प्रयोजन-क्षेत्र

8.3.1 जनसंचार-पत्रकारिता और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

8.3.1.1 मुद्रित पत्रकारिता

8.3.1.2 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

8.3.2 संसद

8.3.3 सभा-सम्मेलन आदि के विवरण

8.3.4 प्रशासन एवं विधि

8.3.5 साहित्य

8.3.6 पर्यटन-भ्रमण

8.4 सारानुवाद की प्रक्रिया

8.5 सारानुवाद का वैशिष्ट्य

8.6 सारानुवाद और अनुवाद

8.7 सारानुवाद और भावानुवाद

8.8 सारानुवाद की सीमाएँ एवं संभावनाएँ

8.9 सारानुवाद का एक उदाहरण

8.10 सारांश

8.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

8.12 शब्दावली

8.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.0 उद्देश्य

सारानुवाद अनुवाद की एक विशिष्ट विधा है तथा इसका प्रयोजन क्षेत्र भी व्यापक है। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत शिक्षार्थी :

- सारानुवाद एवं संक्षिप्तानुवाद का अर्थ एवं आवश्यकता बता सकेंगे;
- सारानुवाद के प्रयोजन क्षेत्रों से परिचित हो सकेंगे;
- सारानुवाद की प्रक्रिया एवं विशिष्टताओं को समझ सकेंगे;
- सारानुवाद का अनुवाद और भावानुवाद से संबंध स्पष्ट कर सकेंगे; तथा
- सारानुवाद की सीमाओं और आने वाले समय में इसकी उपयोगिता बता सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

अनुवाद प्रक्रिया के खंड एक और दो में आप अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद प्रकार, अन-अनुवाद्यता के साथ-साथ अनुवाद परीक्षण, मूल्यांकन, समीक्षा आदि के विषय में जानकर अनुवाद की प्रकृति, उसकी समस्याओं और अनुवाद की गुणात्मकता जैसे विविध पहलुओं से परिचय प्राप्त कर चुके हैं। इससे आप यह भलीभाँति समझ चुके हैं कि अनुवादक को किस प्रकार अनुवाद की विभिन्न प्रविधियों को अपनाते हुए अनुवाद कर्म में आने वाली सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषिक चुनौतियों से पार पाता है। दो भाषाओं में संरचनागत भिन्नता तो होती ही है; उनके संदर्भगत अर्थ संस्कृति-समाज सापेक्ष होने से अन्यार्थ की प्रतीति भी कराते हैं। अलग-अलग विधियों के आधार पर ही अनुवाद के वर्गीकरण भी सामने आते हैं। अनूदित पाठ की प्रामाणिकता एवं गुणात्मकता का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। इसके लिए आपने पुनरीक्षण, मूल्यांकन तथा समीक्षा के जरिए अच्छे और मानक अनुवाद के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर भी जानकारी प्राप्त की। इसी क्रम में इस खंड की प्रथम इकाई में आप अनुवाद की एक अन्य विधा निर्वचन (आशु-अनुवाद) पर आप पहले ही चर्चा कर चुके हैं।

प्रस्तुत इकाई में हम अनुवाद की एक और विधा सारानुवाद पर चर्चा करेंगे। सारानुवाद अर्थात् सार+अनुवाद यानि सार रूप में अनुवाद। सारानुवाद में मूलपाठ के कथ्य, सार अर्थात् प्रमुख कथ्य का अनुवाद किया जाता है। अनुवाद के इस जटिल रूप में स्रोतपाठ में निहित मूल अथवा केंद्रीय बिंदुओं की पहचान कर उनका अनुवाद किया जाता है। मूलकृति का यह संक्षिप्त/सार वास्तव में मूल के संपूर्ण कथ्य को संप्रेषित करता है। संक्षेप किया गय अनूदित पाठ ही सारानुवाद कहलाता है अतः इसे संक्षिप्तानुवाद भी कहते हैं। इस प्रकार एक ही अनुवाद विधा के दो नाम हैं क्योंकि सिद्धांततः सारानुवाद करते समय पहले मूल पाठ के केंद्रीय भाव अथवा कथ्य का संक्षेपण किया जाता है। यानि उसे संक्षिप्त रूप में अर्थवान बनाकर बाद में उसी को विधिवत सार रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस इकाई में हम अनुवाद के इस प्रारूप के तात्पर्य, उसकी आवश्यकता, प्रयोजन क्षेत्र, प्रक्रिया तथा अनुवाद एवं भावानुवाद से तुलना-बिंदुओं आदि पर विस्तार से विचार करेंगे।

8.2 सारानुवाद और संक्षिप्तानुवाद

जब अनुवाद प्रक्रिया में मूलपाठ के समग्र पाठ का अनुवाद करते समय स्थान, समय की तात्कालिकता के अनुसार अनावश्यक विस्तार से बचते हुए अत्यंत सटीक कसे हुए शब्दों में मूलपाठ के कथ्य का सार अथवा केंद्रीय भाव व्यक्त किया जाता है, तो इसे सारानुवाद का नाम दे दिया जाता है। इसे ही संक्षिप्तानुवाद भी कहते हैं। कभी-कभी यह अनुकूलित या संपादित अनुवाद भी कहलाता है। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक एक प्रकार से मूलपाठ से संबद्ध उद्धरणों, विश्लेषणों और अन्य बिंदुओं को छोड़ पाठक के लिए एक लघु पाठ अथवा संक्षिप्त पाठ तैयार करता है जो एक प्रकार का संक्षेपण ही होता है परंतु यह अनूदित रूप में पाठक को मूलपाठ का सही-सही अंदाजा और केंद्रीय भाव को संप्रेषित करने में समर्थ होता है। शिक्षार्थियों की सुविधा और विषय की केंद्रीयता को ध्यान में रखते हुए यहाँ हम अनुवाद के इस रूप को सारानुवाद के नाम से ही अभिहित करेंगे; जो वस्तुतः संक्षिप्तानुवाद, अनूकूलित अथवा संपादित अनुवाद सभी रूपों का प्रतिनिधित्व करता है। सारानुवाद से क्या तात्पर्य है और उसकी क्या आवश्यकता है, अब हम इन प्रश्नों पर आगे विचार करेंगे।

8.2.1 सारानुवाद से तात्पर्य

सारानुवाद का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है सार के रूप में अनुवाद। दूसरे शब्दों में, सार और अनुवाद दो शब्दों के योग से ही सारानुवाद बना है। मूलभाषा की किसी कृति के पाठ में निहित मुख्य कथ्य का संक्षेपण कर उसमें से सार निर्धारित करना, तदनंतर उसका लक्ष्यभाषा में अनुवाद करना ही सारानुवाद है। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि मूलपाठ का संपूर्ण अनुवाद न करके केवल उसके केंद्रीय विचार का अनुवाद करना। सारानुवाद की प्रक्रिया जाहिर तौर पर सरल प्रतीत होती है परंतु वास्तव में यह सामान्य अनुवाद से अधिक जटिल और दोहरी भी है, क्योंकि प्रत्येक कृति अथवा पाठ किसी विशेष विचार अथवा विवरण के संप्रेषण के उद्देश्य से लिखा जाता है। मूलपाठ के इस केंद्रीय अथवा मुख्य कथन को विकसित करने के लिए अथवा स्पष्ट करने के लिए उसके इर्दगिर्द कुछ उदाहरण

तथ्य और अनेक विचार तानेबाने के रूप में मूल लेखक द्वारा रचे बुने जाते हैं। इन्हें उपविचार भी कहा जाता है जो केंद्रीय भाव या विचार की पीठिका से प्रारंभ होकर उसके विचार और निष्कर्ष आदि में परिणत होते हैं। वास्तव में मूलपाठ के इसी केंद्रीय विचार को लक्ष्यभाषा में क्रमबद्ध और संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करना ही सारानुवाद है। यह सारानुवाद मूल कृति के मुख्य कथ्य को प्रकट करता है। यह भी कहा जा सकता है कि जब मूलभाषा के केंद्रीय भाव को लक्ष्यभाषा में क्रमबद्ध और संक्षिप्त रूप में अनूदित किया जाता है तो यह सारानुवाद कहलाता है। मुद्रित माध्यमों में, विशेष रूप से समाचारपत्रों, पत्रिकाओं और विवरणिकाओं में इस प्रकार के संक्षिप्त साररूपी अनुवाद अक्सर देखे जाते हैं जो सुदीर्घ रचना अथवा समाचार या रिपोर्ट की संक्षिप्त परंतु केंद्रीय भावपरक सूचना प्रस्तुत करते हैं।

8.2.2 सारानुवाद की आवश्यकता

आज विश्व में परिस्थितियाँ बदल रही हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विश्व व्यापार राष्ट्रों के मध्य अधिकाधिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंध तथा विश्व मौद्रिक व्यवस्था आदि ऐसे उभरते हुए नवीन क्षेत्र परस्पर हित के कारण एक दूसरे से जुड़ते जा रहे हैं। अब विश्व एक इकाई हो गया है। इस स्थिति में प्रति क्षण हमें यह जानने की आवश्यकता प्रतीत होती है कि कहाँ, किसने क्या कहा, क्या हुआ और क्या लिखा? अनुवाद ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा अन्य भाषाओं के साहित्य (गद्य और पद्य) से हम परिचित होते हैं। साथ ही अन्य देशों के विचार, अनुसंधान कार्य, राजनीतिक-हलचल, सामाजिक-सांस्कृतिक विचारधाराएँ भी प्राप्त होती हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व की सभी भाषाओं के जानकार हमारे देश में हों और जब जिस भाषा से अनुवाद की आवश्यकता हो, करवाया जा सके। मानव जाति दूर-दूर तक फैली हुई है। ऐसे में अनुवाद के द्वारा सभी एक दूसरे के समीप आ जाते हैं और यही अनुवाद की सबसे बड़ी विशेषता बनकर उभरती है।

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देशों के मध्य विकास, सहयोग, अनुसंधान, वित्तीय सहयोग और अनेक दूसरे अन्योन्याश्रित क्रिया-कलाप अत्यधिक संख्या में क्रियान्वित किए जा रहे हैं। परिणामस्वरूप, अन्य देशों के साथ-साथ अपने ही देश के सुदूर क्षेत्रों से पर्याप्त जानकारी आवश्यक होती है। मनुष्य के पास समय और साधन की कमी है। अनुवादक के द्वारा किया गया कार्य कम समय में सभी को उपलब्ध हो जाता है। अनुवाद नए और पुराने के बीच एक कड़ी का कार्य करता है। एक देश को दूसरे से जोड़ना और एक ही देश के दो अंचलों को जोड़ना अनुवाद के द्वारा ही संभव है। ज्ञान के क्षेत्र में जिस प्रकार से क्रांति आई है उससे भी देशों के बीच सहयोग और परस्पर ज्ञान के आदान-प्रदान की आवश्यकता बढ़ी है। वास्तव में सूचना और ज्ञान के नए सागर को तत्काल ग्रहण योग्य सुलभ स्वरूप बनाने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह अतीत को वर्तमान से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

विश्व संस्थाओं के स्तर पर संसार की प्रमुख भाषाओं - अंग्रेजी, चीनी, जापानी, जर्मन, फ्रांसीसी, रूसी, अरबी से अनुवाद की निरंतर आवश्यकता बनी रहती है। यह भी ज्ञात है कि इतने बड़े वैश्विक फलक के स्तर पर संपन्न, चर्चाओं, गतिविधियों, सम्मेलनों आदि की तत्काल पूरी की पूरी प्रस्तुतियाँ सभी पक्षधारियों को उपलब्ध कराना संभव नहीं है। इस दृष्टि से अनुवाद के साथ-साथ भाषिक विश्लेषण करने वाले विशेषज्ञों का महत्व बढ़ गया है। यानि संक्षिप्त और सारानुवाद का क्षेत्र न केवल व्यापक है अपितु कुछ मामलों में यह केंद्रीय रूप से अपरिहार्य भी है। रिकॉर्ड किए गए भाषणों अथवा आशुलिपि में उपलब्ध लंबे-लंबे वक्तव्यों के सार तैयार कर तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। सामाजिक दृष्टि से अनुवाद का महत्व अत्यधिक बढ़ जाने के कारण ही सारानुवाद तत्काल सूचनाओं और जानकारियों की उपलब्धता के साधन के रूप में लगातार महत्वपूर्ण होता जा रहा है।

सारानुवाद का एक महत्वपूर्ण ग्रहीता वर्ग है न्यायालयों के वकीलों और न्यायधीशों का। अक्सर न्यायालयों के फैसले विस्तृत और अनेक परिशिष्टों वाले होते हैं। साथ ही न्यायालयों में जब निचली अदालत के मामलों को उच्च अदालत, जैसे कि उच्च न्यायलय अथवा सर्वोच्च न्यायलय में प्रस्तुत किया जाता है तो पिछले मामलों के पूरे दस्तावेज यथावत हर बार प्रस्तुत नहीं किए जा सकते अपितु उनकी संक्षिप्त रिपोर्ट या सार ही अनूदित कर प्रस्तुत किया जाता है। कुछ मामलों में पूरे विवरण न्यायालल के रिकॉर्ड हेतु बाद में प्रस्तुत किए जाते हैं।

इस पृष्ठभूमि के साथ संक्षिप्तानुवाद और सारानुवाद की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। साहित्य, शोध, विधि, न्याय, व्यापार, संस्कृति, कार्यालयी अनुवाद, पर्यटन सम्मेलन, संसद, श्रेष्ठ रचनाएँ, सामान्य ज्ञान पत्रकारिता, वैचारिक आदान-प्रदान आदि की दृष्टि से संक्षिप्तानुवाद या सारानुवाद अनिवार्य हो गया है। हम कम समय में अधिक जानना चाहते हैं। इसका एक मात्र साधन संक्षिप्तानुवाद या सारानुवाद है। कहना न होगा कि सारानुवाद का प्रयोजन क्षेत्र काफी व्यापक है और वर्तमान समाज की आवश्यकता।

8.3 प्रयोजन-क्षेत्र

अनुवाद की हर विधा का अपना-अपना विशिष्ट प्रयोग क्षेत्र है। सारानुवाद का भी अपना विशिष्ट व्यापक प्रयोग क्षेत्र है जिसमें जनसंचार, पत्रकारिता और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, संसद, सभा-सम्मेलन, प्रशासन और कार्यविधि, साहित्य, पर्यटन-भ्रमण इत्यादि तथा दूसरे क्षेत्र जैसे; प्रशासन और न्यायालय सम्मिलित हैं।

8.3.1 जनसंचार-पत्रकारिता और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

सारानुवाद का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है-जनसंचार। जनसंचार में सामान्यतः विस्तृत जानकारियों को क्रमबद्ध और व्यवस्थित रूप में ढालकर पाठक अथवा श्रोता या दर्शक वर्ग की आवश्यकता, रुचि, तात्कालिकता और सामाजिक-सास्कृतिक पृष्ठभूमि के परिप्रेक्ष्य में ढालकर संगत एवं स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया जाता है। जनसंचार के दो महत्वपूर्ण अंग हैं; पत्रकारिता और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया।

8.3.1.1 मुद्रित पत्रकारिता

सूचना के निर्वाध रूप को सुगम बनाने के लिए विश्व स्तर पर आपसी समन्वय और सहभागिता की वचनबद्धता है। परिणामस्वरूप, विश्व के एक भाग से लेकर दूसरे भाग तक सूचनाएँ, जानकारियाँ और घटनाओं के सीधे विवरण संवाददाता, समाचार एजेंसियों अथवा फीचर एजेंसियाँ भेजती हैं। इन सूचनाओं को प्रौद्योगिकी के विभिन्न माध्यमों जैसे टेलीफोन, मोबाइल, फैक्स, ईमेल, इंटरनेट के साथ-साथ डाक अथवा उपग्रह-सहायित अन्य प्रणालियों द्वारा समाचारपत्रों, पत्र-पत्रिकाओं के संपादकीय कार्यालयों तक पहुँचाया जाता है। सूचना भेजने वाली एजेंसियाँ अंग्रेजी, हिंदी अथवा दूसरी राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय भाषाओं का प्रयोग करती हैं। अतः उनका लक्ष्यभाषा के अनुरूप अनुवाद किया जाता है। परंतु यह अनुवाद प्राप्त समस्त मूलपाठ अथवा जानकारी या दस्तावेज़ का न होकर केवल सारानुवाद होता है क्योंकि लक्ष्यवर्ग की अपनी विशिष्ट आवश्यकताएँ होती हैं। भारत में ही देखा जाए तो कुल भारतीय परिदृश्य में अंग्रेजी, हिंदी तथा अनेक दूसरी भारतीय भाषाओं में मूल सामग्री प्राप्त होती है। इसका अनुवाद किया जाता है और पत्र-पत्रिका विशेष के भाषा माध्यम के अनुरूप उसे प्रस्तुत किया जाता है। महत्वपूर्ण है कि समाचारपत्रों में समसामयिक सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, विकासात्मक गतिविधियों की जानकारी के साथ-साथ सरकारी संगठनों तथा संसद और विधान सभाओं में संपन्न होने वाली सुदीर्घ चर्चाओं से संबंधित सामग्री छापी जाती है। यह सामग्री काफी साररूप में तथा अनूदित रूप में ही हमारे सामने आती है। अक्सर समाचार पत्रों में हम विभिन्न पृष्ठों के बाईं तरफ समाचार संक्षेप, न्यूज़ डाइजेस्ट और न्यूज़ कैप्स्यूल इत्यादि देखते हैं जो सारानुवाद का एक और उदाहरण है। भारतीय पत्र-पत्रिका जगत में सारानुवाद की परंपरा भारतेंदु हरिश्चंद्र के समय से ही देखने में आ रही है जिन्होंने हिंदी समाचारपत्र, 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' में अंग्रेजी के शीर्षक देने की शुरुआत की और साथ ही समाचारों की संक्षिप्त सूचना 'समाचारावली' को 'समरी ऑफ न्यूज़' के नाम से प्रकाशित किया था। आज यह समस्त समाचारपत्रों, पत्रिकाओं का एक प्रस्तुति रूप बन गया है। पत्रिकाओं में भी अक्सर सारानुवाद देखने को मिलता है जब किसी लंबी समाचार शृंखला को सामग्री के बीच में बॉक्स अथवा रंगीन कॉरीडॉर में दिया जाता है। यही नहीं नई घटनाओं और खोजी समाचारों के साथ उससे संबद्ध पिछली घटनाओं का सार बिंदुवार भी दिया जाता है; इससे अनावश्यक विस्तार से बचते हुए पाठक-लक्षिता वर्ग को सर्वांगीण जानकारी दी जाती है। इस प्रकार जनसंचार में सारानुवाद का प्रयोग व्यापक पैमाने पर होता है।

8.3.1.2 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अंतर्गत परंपरागत रूप से रेडियो और टेलीविजन को रखा गया है। इंटरनेट सहायित माध्यम में अब इस श्रेणी में आ रहे हैं। विश्व भर में रेडियो तथा टेलीवीजन के लाखों कार्यक्रम प्रतिदिन प्रसारित किए जाते हैं। इनमें कार्यक्रम तथा समाचार दोनों ही होते हैं। सामान्य कार्यक्रमों के संदर्भ में हम जानते हैं कि उनके निर्माण की लंबी प्रक्रिया व अनुसंधान होता है परंतु प्रसारित कार्यक्रमों में श्रोता अथवा दर्शक 'फिनिश्ड प्रोडक्ट' को ही जानता है न कि उस सारी सामग्री जिसके आधार पर वह 'फिनिश्ड' अथवा दिखाया सुनाया गया कार्यक्रम होता है। समाचारों के मामलों में भी कमोबेश सारानुवाद का सहारा लिया जाता है क्योंकि समाचार एजेंसियों अथवा संवाददाताओं के विभिन्न भाषाओं के माध्यम से तो लंबी-लंबी रिपोर्ट या डिस्पैच प्राप्त होते हैं जिनका संक्षेपण किया जाता है और अनुवाद कर क्षेत्रीय अथवा राष्ट्रीय प्रसारण में सम्मिलित कर लिया जाता है। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के समाचार कक्ष में यह प्रत्यक्षतः देखा जा सकता है जहाँ मूलपाठ से एक पाठ सारानुवाद के रूप में तैयार कर लिया जाता है और बाद में उसका अनुवाद क्षेत्रीय भाषाओं में किया जाता है। रेडियो न्यूज़रील तथा संसद समाचार इसका उदाहरण है। फीचर तथा दस्तावेजी कार्यक्रमों में भी इसी प्रकार ढेर सारी सामग्री से एक संक्षिप्त पाठ तैयार किया जाता है जो एक बड़े परिदृश्य अथवा व्यापक दृष्टिकोण को समेटता है तथा कार्यक्रम की अवधि, लक्ष्य वर्ग की रुचि तथा आवश्यकता एवं भाषायी माँग के अनुरूप सारीकृत कर प्रसारित कर किया जाता है। ई-माध्यम भी अब समाचारों की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहे हैं क्योंकि आज अधिकांश ई-न्यूज पेपर पढ़ना चाहते हैं जो प्रकाषित पत्रा का प्रतिरूप होता है, परंतु कभी यह अलग संक्षिप्त संस्करण भी होता है। अनेक समाचारों का सार आज विभिन्न केबल माध्यमों तथा इंटरनेट साइट्स और मीडिया की अपनी आधिकारिक साइट्स पर उलब्ध होते हैं।

8.3.2 संसद

संसद की कार्यवाही को आपने सीधे प्रसारित होते देखा होगा। अतः यह तो आपको विदित है कि भारतीय संसद में हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कार्यवाही होती है। सदस्यों को पूर्व सूचना देने पर भारतीय भाषाओं में बोलने की अनुमति भी होती है। परिणामस्वरूप, हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्रस्तुत वक्तव्यों का अंग्रेजी में अनुवाद और अंग्रेजी से हिंदी में तात्कालिक अनुवाद आशु अनुवाद के रूप में किया जाता है। यही नहीं दैनिक बहसों के भा ाणों का सार तैयार कर अगले दिन सदस्यों ने सभा प्रारंभ होने से पूर्व बाँट दिया जाता है ताकि पिछले दिन की बहसों के बारे में सदस्यों द्वारा उठाए गए मुख्य मुद्दों की जानकारी मिल सके। अक्सर यह सामग्री लंबी बहस का संक्षिप्त रूप होती है जो साररूप में पूरी कार्यवाही पर प्रकाश डालती है तथा हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में तैयार की जाती है। संसद में कार्यवाही के संक्षेपों और सारानुवाद प्रक्रिया सभा समाप्त होने के तुरंत बाद शुरू होकर देर रात तक चलती रहती है। संसद की कार्यवाही का विधिवत रूप में प्रकाशन भी किया जाता है। अंग्रेजी में भाषणों का सारानुवाद छापा जाता है जबकि हिंदी में इन्हें मूल रूप में छापा जाता है। ज्ञातव्य है कि संसद की यह गतिविधि त्वरित रूप में संपन्न की जाती है और अत्यधिक सतर्कता बरती जाती है ताकि अनूदित सामग्री सार रूप में मूल भाषण की गरिमा और पूरे आषय को व्यक्त कर सके। वास्तव में सारानुवाद के लिए यह एक कसौटी का क्षेत्र है। व्यावहारिक दृष्टि से संसद तथा विधान सभाओं में सारानुवाद का प्रयोग व्यापक पैमाने पर होता है।

8.3.3 सभा-सम्मेलन आदि के विवरण

आपसी सहयोग, समझ-बूझ, विकास, आर्थिक प्रगति आदि परिप्रेक्ष्यों के अंतर्गत विभिन्न सरकारी, निजी और क्षेत्रों द्वारा समायोजित की गई संगोष्ठियों, सभाओं, सम्मेलनों तथा संवाद इत्यादि की कार्यवाहियों का भी अनुवाद आमतौर पर सार के रूप में तैयार किया जाता है। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाध्यताओं (विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोश, एशियाई विकास बैंक तथा अन्य वित्त पोषक एजेंसियाँ) और नियमों के अंतर्गत इनकी जानकारी सभी पक्षधारियों को देना भी आवश्यक होता है। अतः इनका अनुवाद किया जाता है। यह अनुवाद संक्षिप्त रिपोर्ट के रूप में चर्चाओं तथा निष्कर्षों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है। विभिन्न संस्थानों द्वारा अपनी वार्षिक रिपोर्ट और प्रोफाइल आदि में भी इसी प्रकार सारानुवाद किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय सभाओं यथा संयुक्त

राष्ट्र, विश्व संस्थाओं, वित्त संस्थाओं के संभा ाणों के भी सारानुवाद सभी मुख्य भाषाओं में किए जाते हैं। यह इस दृष्टि से आवश्यक है कि विश्व संस्थाओं में सभी देशों की भागीदारी बन सके। यही नहीं इन सभाओं में बहुभाषिकता की स्थिति को देखते हुए भी सारानुवाद की आवश्यकता होती है।

8.3.4 प्रशासन एवं विधि

भारत में द्विभाषिकता की स्थिति के अनुरूप विभिन्न कार्यालयों विशेषकर केंद्रीय सरकार और उसके अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं का प्रयोग होता है। इसीलिए सारे देश को क, ख और ग क्षेत्रों में भी बाँटा गया है। कई बार कुछ मामलों में पूर्व में हुई लंबी कार्यवाही अथवा विस्तृत संदर्भों का तिथिवार और क्रमवार संक्षेपण तैयार कर संबंधित मामले के संदर्भ में उद्धृत किया जाता है। यह अक्सर सारानुवाद ही होता है, जो पूरी कार्यवाही के मुख्य कथ्य और तथ्य को प्रस्तुत करता है। विभिन्न मामलों पर टिप्पणी और पत्रों के मसौदे बनाते समय भी सारानुवाद का सहारा लिया जाता है, ताकि मामले से संबंधित विभिन्न अधिकारियों और संदर्भों के आलोक में लिए गए फैसलों को एक सुनियोजित भाषायी बंध में तैयार किया जा सके कि वह संबंधित (तों) के लिए निर्णय और उसके भावी परिणामों के प्रति स्पष्ट बयानी कर सके।

विधि और न्यायालयों में भी सारानुवाद की आवश्यकता बढ़ रही है, क्योंकि अब कुछ दस्तावेज अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में भी आने लगे हैं। परंतु अभी भी कुछ न्यायालयों में इन सब दस्तावेजों को केवल अंग्रेजी में ही प्रस्तुत करने का प्रावधान है। परिणामस्वरूप सार के रूप इन्हें अनूदित कर प्रस्तुत किया जाता है। फैसले देते समय न्यायधीश पिछले संदर्भों पर विस्तृत मनन करते हैं जिसके लिए उन्हें लिए गए फैसलों के सारांश अथवा सारानुवाद अपेक्षित होते हैं ताकि वे वर्तमान मामलों पर पिछले निणयों के आलोक में गौर कर सके। विधि और प्रशासन के इस क्षेत्र में सारानुवाद के लिए अनुवादकों को न केवल तकनीकी शब्दावली का ज्ञान अपेक्षित होता है अपितु कार्यक्षेत्र की संस्कृति, गरिमा और व्यवहार आदि की भी जानकारी अपेक्षित होती है। विधि क्षेत्र की प्रकृति के अनुरूप दस्तावेजों की आवश्यकता सदैव बनी रहती है परंतु इतनी बढ़ी मात्रा में इन्हें सदैव साथ रखना संभव नहीं होता है; अतः मुख्य दस्तावेजों की संक्षिप्ति या सार बनाकर तत्काल संदर्भ हेतु तैयार कर रख लिया जाता है।

8.3.5 साहित्य

साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद भाव प्रधान होते हैं परंतु उसमें भाषायी जादूगरी भी कम महत्वपूर्ण नहीं होती। साहित्य के अनुवाद को सामान्यतः सारानुवाद की श्रेणी में नहीं रखा जाता, परंतु जब किसी साहित्यिक विधा की सामग्री का अनुवाद किसी दूसरी विधा में किया जाता है तो उसे सारानुवाद कहा जा सकता है। साहित्यिक सामग्री का सारानुवाद अपने आप में विशेष चुनौती का क्षेत्र है क्योंकि यह सूचना-प्रधान न होकर भाव संप्रेषण और मूलकृति के तारतम्य को बनाए रखने का कार्य होता है। नाटक, जीवनी, वृतांत, गल्प आदि में सारानुवाद की उपयोगिता होती है जब इन्हें हम किसी दूसरी विधा में प्रस्तुत करते हैं। शेक्सपीयर के नाटकों के कथा अनुवाद सारानुवाद ही हैं। इसी प्रकार देवकी नंदन खत्री के कई खंडों में रचित चंद्रकांता का एक ही खंड में अंग्रेजी अनुवाद भी सारानुवाद का एक उदाहरण है।

8.3.6 पर्यटन-भ्रमण

खेल, यात्रा, रोमांच और साहसिक गतिविधियाँ अक्सर व्यक्ति को अपने निवास क्षेत्र से बाहर जाने के लिए आमंत्रित करती हैं। यही पर्यटन की निर्मिति करता है। जाहिर है भाषायी और सांस्कृतिक भिन्नताएँ पर्यटक को अपरिचित स्थान के विषय में जानने के लिए प्रेरित और विवश करती हैं। पर्यटक तत्काल संक्षेप में अपनी भाषा और फॉर्मेट (प्रारूप) में जानकारी चाहता है। वह अपने यात्रा क्रम में यात्रा के लिए यातायात, आवास, पर्यावरण, मौसम तथा वित-सुविधाओं से संबंधित आवश्यक सूचना एवं निर्देश भी चाहता है परंतु वह उस स्थान, घटना, मौसम की ऐतिहासिकता के विवरण की अपेक्षा सामयिक संदर्भ को अधिक जानना चाहता है ताकि अपने प्रयास को अधिक सुनियोजित कर सके। ऐसे में पर्यटकों के लिए बनाए गए साहित्य में सटीकता, संप्रेषणीयता तथा सारता आदि महत्वपूर्ण बिंदु निहित होते हैं। यही बिंदु पयर्टकों के लिए बनाए गए दृश्य श्रव्य कार्यक्रमों अथवा

सद्य रूप से दी जाने वाली उद्घोषणाओं में भी सम्मिलित रहते हैं। इस प्रकार पर्यटन भी सारानुवाद का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

8.4 सारानुवाद की प्रक्रिया

सारानुवाद एक चरणबद्ध प्रक्रिया है जिसमें पाठ के सम्यक् अध्ययन के उपरांत अर्थ ग्रहण किया जाता है तथा एक निश्चित क्रम में व्यक्त किया जाता है। मूलकृति का पठन एक से अधिक बार किया जाना ही अपेक्षित होता है क्योंकि इसी से यह पता चलता है कि पाठ किस संदर्भ में लिखा गया है। संदर्भ का ज्ञान हो जाने पर पाठ के वाक्यों और अनुच्छेदों में अर्थक्रम की अभिव्यक्ति को भी ठीक से ग्रहण किया जा सकता है। यह भी देखा जाता है कि सभी पाठ एक समान नहीं होते। सारानुवाद के लिए उपलब्ध पाठ की भाषा की क्लिष्टता और वाक्यों की जटिलता भी अर्थ ग्रहण में समस्या उत्पन्न करती है। मूलपाठ में मिश्रित वाक्यों के प्रयोग से या निक्षिप्त उपवाक्यों के परस्पर संबंध को पूरी तरह समझे बिना अर्थ ग्रहण मुश्किल होता है। कई बार अभिप्रेत विचार को उपमा, अन्योक्ति आदि अलंकारों अथवा उदाहरणों अथवा किसी घटना के वर्णन के माध्यम से या ऐसे ही किसी अप्रत्यक्ष रूप में अभिव्यक्त करने का प्रयास रहता है। ऐसी अभिव्यक्ति में से अभिप्रेत विचार से केंद्रीय भाव खोजकर निकालना और स्पष्ट करना होता है। इसमें यह भी देखा जाता है कि मूलपाठ के कथ्य का तात्पर्य क्या है, मूल कथ्य में लेखक का उद्देश्य क्या है और मूल कथ्य का विस्तार किस क्रम में किया गया है। अतः मूल अथवा स्रोतपाठ का एकाधिक पठन, मनन आवश्यक हो जाता है।

मूलपाठ को समझने और उसके उद्देश्य की पहचान करने के उपरांत पाठ के प्रमुख कथ्य पर ध्यान दिया जाता है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि विषय के प्रतिपादन में कौन सा केंद्रीय विचार किस विचार क्रम में सहायक है अथवा क्या कहा जा रहा है और किस मूलकथ्य का विस्तार किस तात्पर्य के लिए किया गया है। मूल कथ्य में कभी-कभी लाक्षणिक अभिव्यक्तियों में से मूल विचार को खोज निकालने में वाक्य अथवा अभिव्यक्तियाँ सहायक होती हैं और लेखक किसी विचार को उपमा, उद्धरण, अन्योक्तियों आदि से स्पष्ट करता है। अतः इस स्थिति में जिस विचार की ओर संकेत क्रम बनता है उसे सारानुवाद के लिए रख लिया जाता है। सारानुवाद के क्रम में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि मूल पाठ में जोड़ने और छोड़ने की जो स्थिति बनती है उससे समग्र कृति के कथ्य का क्रम बना रहे।

सारानुवाद की इस प्रक्रिया में जिस पाठ या कृति को अनुवाद के लिए चयनित किया जाता है। उसके एकाधिक अध्ययन के बाद ही उसके केंद्रीय विचार अथवा मूलकथ्य को ग्रहण कर सार के रूप में लिख लिया जाता है। एक से अधिक अवतरणों में प्रत्येक के मुख्य विचारों की एक क्रमबद्ध सूची बना ली जाती है जिसे सारानुवाद करते समय सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाता है। सार लिखते समय केवल उन्हीं वाक्यों या पदबंधों को रखा जाता है जो केंद्रीय विचार को स्पष्टतः व्यक्त करते हों। उदाहरण के लिए यदि पर्यावरण संबंधी किसी अवतरण अथवा कृति का सारानुवाद करना हो तो पर्यावरण को परिभाषित और प्रभावित करने वाले वाक्यों को प्रधानता दी जाएगी जबकि उसके सामाजिक पक्षों को गौण रखा जाएगा। सारानुवाद की प्रक्रिया के इस प्रकार दो प्रमुख क्रिया पक्ष सामने आते हैं। प्रथमतः सारानुवाद का प्रारूप तैयार करते समय पहले पाठ का सार मूल रूप में तैयार किया जाता है तदुपरांत उसका अनुवाद लक्ष्यभाषा में किया जाता है। परंतु कभी-कभी प्रबुद्ध अनुवादक मूलपाठ का सार अपने मस्ति क में क्रमबद्ध कर सीधे लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत कर लेता है। सारानुवाद के मूलपाठ के कुछ अंश यथावत रख लिए जाते हैं तथा कुछ को आंशिक सुधार के साथ समन्वित कर लिया जाता है।

महत्वपूर्ण यह है कि सारानुवाद करते समय न केवल कथ्य का संक्षेपण ही हो अपितु उसकी बातें भी लक्ष्य पाठ में आ जाए। यह भी देखा जाए कि कोई अंश न तो छूटने पाए न ही पुनरुक्ति हो इसके लिए लक्ष्य पाठ को रेखांकित अंशों और मुख्य विचारों की सूची से मिलाकर देखा जा सकता है। भाषा सरल तथा सुबोध अवश्य हो परंतु यह अलंकार और शब्दजाल से मुक्त हो। सारानुवाद एक प्रकार का संक्षेपण ही माना जाता है। अतः विद्वानों का ऐसा विचार है कि यह मूलपाठ का लगभग एक तिहाई हो तो पर्याप्त होता है परंतु यह सीमा कोई अंतिम नहीं है। अतः इसमें किंचित हेर-फेर हो सकता है। मूल कृति के कथ्य और उसकी महक बनी रहे इसके लिए

अनुवादक को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है और अंततः यह मूल के अर्थ की सभी दृष्टियों से पूर्ति करने वाला ही चाहिए, परंतु इसमें कृत्रिमता एवं असंबद्धता और असंगतता के लिए कोई स्थान नहीं होता।

8.5 सारानुवाद का वैशिष्ट्य

सारानुवाद मूलकृति या पाठ के केंद्रीय भाव को व्यक्त करता है, अतः उसके विशिष्ट और तकनीकी स्वरूप को बनाए रखने में संक्षिप्तता, सूचना-प्रधानता, विचारों की क्रमबद्धता, भाषाशैली तथा संपादन जैसे गुण महत्वपूर्ण होते हैं।

सारानुवाद में संक्षेपण और अनुवाद दोनों कार्य होते हैं। अतः यह एक दोहरी प्रक्रिया होने से जटिल भी है। संक्षेपण में मूलपाठ के संक्षिप्त अर्थ को लिया जाता है जबकि सारानुवाद करते समय तथ्य के मूल उद्देश्य को भी उद्घाटित किया जाता है। मानक रूप संक्षिप्तता मूलपाठ की एक तिहाई या इससे कम हो तो उत्तम होता है परंतु यह उल्लेखनीय है कि सारानुवाद विषय-विशेष की प्रकृति के अनुसार होता है क्योंकि इसमें घटना के विवरण को सार रूप में दिया जाता है। सारानुवाद का महत्वपूर्ण विषयक्षेत्र सामाजिक विज्ञान के विविध विषयों यथा अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान, न्यायालय अथवा कार्यालय संबंधी विधि और प्रक्रिया, दर्शन, पत्रकारिता जैसे महत्वपूर्ण अनुशासनों के संदर्भ में उल्लेखनीय है तथा संक्षेपण और सार का आकार-प्रकार इन विषय क्षेत्रों की प्रकृति के आधार पर ही तैयार किया जाता है।

सारानुवाद में मूलतः सार अथवा घटना विवरण की सूचना देना अभिप्रेत होता है। अतः लक्ष्यपाठ में सूचनात्मकता के पुट को बनाए रखना महत्वपूर्ण है ताकि पाठक अथवा लक्ष्यवर्ग मूलपाठ के विषय, घटना अथवा गोष्ठी आदि के प्रमुख बिंदुओं या विचारणीय मुद्दों से परिचित हो सकें।

हमने अभी चर्चा में पाया कि सारानुवाद में प्रतिपादित विषय का विचारक्रम मूल कृति अथवा पाठ के अनुसार ही बनाए रखा जाता है। मूल पाठ में प्रतिपादित विचारों के अनुक्रम पर आधारित विषय ही अपने कथ्य की अभिव्यक्ति कर सकता है। अतः सारानुवाद मूलकृति के आशय को आद्योपांत व्यक्त करने का प्रयास रहता है जिससे विचारों के तारतम्य का उद्घाटन सहजता से हो सके। चूँकि सारानुवाद मूलकृति का स्वतःपूर्ण रूप माना जाता है अतः इसे मूल का पर्याय भी कहा जाता है।

सारानुवाद में मूल कृति का आभास बराबर बना रहे, इसके लिए आवश्यक है कि उसमें विषय के अनुरूप और लोक व्यवहार में प्रचलित बोधगम्य सरल शब्दों का प्रयोग किया जाए। लाक्षणिक और अलंकारिक भाषा के स्थान पर नपीतुली और संतुलित भाषा जो संपूर्ण मूलकथ्य को अंतरित करने में समर्थ हो उसका प्रयोग किया जाना अपेक्षित है। उदाहरण के लिए, सूचना प्रौद्योगिकी अथवा शेयर बाजार और आयात-निर्यात गतिविधियों से संबंधित पाठ के सारानुवाद में तकनीकी एवं क्षेत्र-विशेष में प्रचलित शब्दों का प्रयोग उपयोगी है। पारिभाषिक शब्दावली के साथ-साथ लोक व्यवहार के शब्द सारानुवाद में मूल के कथ्य को व्यक्त करने में अधिक सहायक होते हैं। मोबाईल, ई-मेल, इंटरनेट, खाता, बजट, रॉयल्टी और माचिस जैसे शब्द सहज रूप में प्रयोग किए जा सकते हैं, जो लक्ष्यपाठ में अपने संपूर्ण अर्थ को व्यक्त करने में समर्थ होते हैं।

सारानुवाद के लिए चयनित पाठ का संक्षेपण करते समय न केवल उसके आकार प्रकार को स्पष्टतः घटा दिया जाता है अपितु उसके असंगत एवं अनावश्यक वाक्य, उपवाक्यों को हटाकर मूल-कथ्य को सटीक और प्रवाहमान बना दिया जाता है। इससे एक प्रकार के पुनःसृजन की प्रक्रिया शुरू होती है जिसमें अनुवादक के चिंतन और रचना कौशल की भी भूमिका होती है। संक्षेपण के लिए मूलपाठ की काट-छाँट और सार रूप में निर्मित नए पाठ की यह शल्यकर्म जैसी प्रक्रिया संपादन गतिविधि भी कही जा सकती है। सारानुवाद की यह प्रक्रिया अनुवाद से कई मामलों में भिन्न होती है।

8.6 सारानुवाद और अनुवाद

अनुवाद का क्षेत्र काफी व्यापक है और विभिन्न प्रकार के अनुवाद की प्रविधि तथा उद्देश्य की दृष्टि से अपनी विशिष्टता होती है। अनुवाद सामान्यतः एक भाषा की कृति का अर्थ लक्ष्यभाषा में उसी रूप में प्रस्तुत करता है

परंतु यह मूलकृति के सहपाठीय भावों को भी परिलक्षित करता है। सारानुवाद अपने आप में एक विशिष्ट प्रयोजन क्षेत्र है जिसमें मूलपाठ के केंद्रीय भाव को संप्रेषित करने पर बल होता है। मूलकृति के भाव संप्रेषण को सुगठित, सुव्यवस्थित और संक्षिप्त रूप में व्यक्त करते समय भाषा की लाक्षणिकता और भाषा शैली आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता। यह सच है कि कोई भी अनुवाद पूर्णतः शब्दों का मात्र अंतरण नहीं होता है परन्तु भाषा की लाक्षणिकता के शब्दों पर आधारित होने के कारण सामान्य अनुवाद में अनुवादक प्रत्येक शब्द और वाक्य को महत्व देता है और सभी पदबंधों के अर्थ को समन्वित रूप से लक्ष्यभाषा में अनूदित करने का प्रयास करता है। मूलनिष्ठता का प्रश्न लगातार बना रहता है। इसके विपरीत सारानुवाद में मूलपाठ में निहित मुख्य कथ्य अथवा विचारसूत्र को ग्रहणकर लक्ष्यभाषा में बोधगम्य शब्दों में व्यक्त किया जाता है। सारानुवाद एक प्रकार का संक्षेपण और संपादन है जिसमें मूलकृति में प्रत्यक्ष तौर पर काट-छाँट की जाती है और क्रमानुसार सुव्यवस्थित कर उसके अर्थ को संप्रेषित करने की कोशिश की जाती है ताकि समय और संसाधनों के अनुरूप सूचना तथा मूल कथ्य का भाव उपलब्ध हो सके, हालाँकि सारानुवाद भावानुवाद से कुछ बिंदुओं में भिन्न होता है।

8.7 सारानुवाद और भावानुवाद

सारानुवाद में मूलकृति अथवा पाठ का केंद्रीय भाव अर्थात् कथ्य ही अंतरित किया जाता है। इस दृष्टि से सारानुवाद एक प्रकार का भावानुवाद ही कहलाता है। सारानुवाद और भावानुवाद दोनों में मूलपाठ की शैली अथवा भाषिक इकाइयों की अपेक्षा उनमें निहित 'कथ्य' भाव को ध्यान में रखा जाता है। मूलपाठ में प्रयुक्त शब्दों, पदबंधों और वाक्यों आदि की भी भिन्न अर्थछायाएँ हो सकती हैं और लक्ष्यभाषा में इन्हीं शब्दों और पदबंधों का अर्थ-व्यंजना के अनुरूप अलग-अलग प्रकार से अनुवाद किया गया अनुवाद अर्थ-व्यंजन पर आधारित होने से भावानुवाद कहलाता है। विचार के विवरणों के विस्तार की अपेक्षा इसमें मूलकृति के विचार क्रम का अनुसरण करना महत्वपूर्ण होता है। सारानुवाद और भावानुवाद दोनों में ही मूलानुवर्ती पर्यायों के स्थान पर मूलभाव को व्यक्त करने वाले पर्याय चुनने का विकल्प रहता है। अभिप्राय यह है कि भावानुवाद में संकेतार्थ प्रस्तुत किया जाता है जबकि सामान्य अनुवाद में समतुल्य शब्दों को प्रमुखता दी जाती है। भावानुवाद में समतुल्य उपलब्ध न होने की स्थिति में लक्ष्यभाषा की रचना प्रकृति और सामाजिक संस्कार के अनुसार मूल भाव व्यक्त करने वाले शब्दों का चयन भी किया जा सकता है। सारानुवाद की अपेक्षा भावानुवाद में एक नई रचना की निर्मिति होती है, जिसमें मौलिकता भी होती है और इसमें भाव का स्वाभाविक विस्तार तथा उतार-चढ़ाव दिखाई देता है। परंतु यह विस्तार स्वच्छंद और मूल संदेश की परिधि से बाहर नहीं होता।

भावानुवाद की तुलना में सारानुवाद में संक्षेपण की प्रक्रिया के फलस्वरूप अभिव्यक्ति के आकार की सीमा होती है और संपादन भी होता है। मूलकृति के प्रत्येक पद या वाक्य की अर्थ-व्यंजना का अंतरण करना संभव नहीं होता। परंतु भावानुवाद में प्रायः आकार की सीमा नहीं होती और साथ ही मूलकृति के अनुरूप निरंतरता बनी रहती है। राजनीति तथा लोक प्रशासन आदि से संबंधी सुदीर्घ वक्तव्यों के भावानुवाद प्रायः मूल से आकार में थोड़े ही छोटे होते हैं परंतु मूल बिंब विधान को और प्रखर रूप में प्रस्तुत किया जाता है जबकि सारानुवाद में इसका आकार विशेष रूप से परिसीमित होकर केवल मूल कथ्य का ही प्रस्तुति करता है। सारानुवाद में मूलपाठ के कुछ पदबंधों अथवा वाक्यांशों को यथावत् भी रख लिया जाता है और कुछ आंशिक रूप से, परंतु भावानुवाद में यह आवश्यक नहीं होता है। सारानुवाद प्रत्येक अनुवाद स्थिति में आदर्श विकल्प नहीं होता। इस प्रकार सारानुवाद की अपनी कुछ सीमाएँ हैं ।

8.8 सारानुवाद की सीमाएँ एवं संभावनाएँ

अनुवाद के क्षेत्र में सारानुवाद एक विशेष प्रयोज्य विधा है जो मूलकृति अथवा पाठ की सूचना देती है। मूलकृति अपनी समग्रता में हमारे सामने नहीं आती, हालांकि उसकी गंध अवश्य होती है। मूलकृति का रूप सामने नहीं होता परंतु उसकी आत्मा की प्रतीति होती है। यह सच है कि मूल कृति में केवल विचार और भाव ही नहीं होते उन विचारों को प्रखरता देने के लिए विशेष शैली का उपयोग भी किया जाता है। सारानुवाद में हमें मूलकृति में निहित रस का ज्ञान होता है परंतु मूल की भाषाशैली और संस्कार नहीं होने से उसका रसास्वादन नहीं हो सकता।

सारानुवाद मूलकृति के उद्देश्य को हमारे सामने रखता है परंतु यह केवल मूलपाठ का संप्रेषण होता है उसके ध्वन्यार्थ उसमें प्रतिबिंबित नहीं होते हैं। मूल वक्ता अपने मन्तव्य को अपने मानसिक क्रम से मूलपाठ में रखता है। सारानुवाद के माध्यम से उसका अभिप्राय जानना मुश्किल हो जाता है।

सारानुवाद मूलतः सूचना-प्रधान होने के कारण शैलीगत सौंदर्य और ओजस्विता की संभावना नहीं देता। अतः शैली प्रधान और ओजप्रधान कृतियों का सारानुवाद नहीं हो सकता। सुभद्रा कुमारी चौहान और शिवराज विजय जैसी कृतियाँ ऐसी ही हैं। इसी प्रकार साहित्यिक रचनाओं का विशेषकर कविता का सारानुवाद संभव नहीं है जबकि नाटक, उपन्यास और संस्मरण आदि का सारानुवाद किसी सीमा तक हो सकता है, क्योंकि इनमें सूचनात्मक पुट भी होता है। राहुल सांकृत्यायन के यायावरी संस्मरणों का सार किया जा सकता है।

पत्रकारिता और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में सारानुवाद का उपयोग कई स्तरों पर होता है। संचार माध्यमों का प्रयोक्ता वर्ग भी विविध प्रकार की सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, भौगोलिक और व्यावसायिक पृष्ठभूमियों से संबंधित होता है। अतः सारानुवाद के माध्यम से उनके लिए संक्षिप्त, सटीक और तात्कालिक रूप से महत्वपूर्ण जानकारियों उपलब्ध कराई जा सकती हैं। परंतु यह जानकारियां केवल सूचनात्मक होती है, इनके माध्यम से किसी प्रकार से संदर्भ अथवा विधि या प्रशासनिक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं की जा सकती। सरकारी कार्यालयों में भी अक्सर विभिन्न दस्तावेज़ों का सारानुवाद अपनी टिप्पणी के साथ प्रस्तुत किया जाता है जिसका क्रमवार ब्यौरा दिया जाता है। न्यायालयों में भी इसी प्रकार संक्षेपण अथवा सार अनुवाद के रूप में लंबे-लंबे निर्णयों को लक्ष्यवर्ग की भाषा में प्रस्तुत किया जाता है। हालांकि सरकारी कार्यालयों तथा न्यायालयों में सारानुवाद के साथ-साथ अनेक अवसरों पर मूलकृति को सांगोपांग रखना भी अपेक्षित होता है। इसी प्रकार जहाँ संसद में सारानुवाद मुख्य रूप से संसद सदस्यों की सूचना हेतु महत्वपूर्ण उपागम है वहीं संसद की कार्यवाही के पूरे प्रारूप भी संसद सदस्यों को यथासमय यथातथ्य रूप में उपलब्ध कराए जाते हैं। अतः सारानुवाद की अपनी सीमाएँ हैं।

सारानुवाद अपेक्षाकृत अनुवाद की एक उभरती हुई अनुवाद विधा है और इसका अपना विशेष प्रयोजन क्षेत्र है। बढ़ते वैश्विक, संबंधों और सूचना क्रांति के कारण आदान-प्रदान में अप्रत्याशित प्रगति और विस्तार से सूचना के निर्बाध व तीव्र गति से प्रसार को सुगमित करना आवश्यक हो गया है। इस दृष्टि से सारानुवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। आज हम अनेक महत्वपूर्ण कृतियों की समीक्षाएँ सारानुवाद के रूप में पढ़ते हैं तथा अपनी दिनचर्या के लिए जानकारियों को संक्षेप में देखना-जानना चाहते हैं। प्रत्येक कार्य क्षेत्र से संबंधित नित नई जानकारी व्यक्ति लेना चाहता है। सारानुवाद के संदर्भ में नई सूचना प्रौद्योगिकी का भी महत्व है, क्योंकि यह सूचना के संप्रेषण में बड़ी भूमिका निभाती है। किसी विशेष भाषा में उपलब्ध ज्ञान साहित्य के तीव्र एवं सटीक समावेश के लिए भी सारानुवाद का प्रयोग संक्षिप्त परिचय देने हेतु किया जा रहा है। यह भी सच है कि सभी कृतियों का सारानुवाद संभव नहीं है तथापि तात्कालिकता और सूचना की शक्ति के आलोक में हम सारानुवाद से बच भी नहीं सकते। अनेक भारतीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी अंग्रेजी में निर्मित विश्वकोश और उनके हिंदी अंग्रेजी संस्करण भी सारानुवाद के उदाहरण हैं। इस प्रकार सारानुवाद एक ऐसी विधा के रूप में स्थापित हो रहा है जो अपनी व्यावहारिक उपयोगिकता के कारण अनुवाद अध्ययन क्षेत्र में महत्वपूर्ण संयोजन है।

8.9 सारानुवाद का एक उदाहरण

सारानुवाद के अभ्यास हेतु एक उदहारण यहाँ दिया जा रहा है। प्रदत्त उद्धरण को आप पहले ध्यानपूर्वक पढ़ें। दो-तीन बार सावधानी से पढने के उपरांत आप जान पायंगे कि **संबोधन किस प्रधान विषय से सम्बंधित है तथा इसका किस और संकेत है:**

Peace, friendship and cooperation bind nations and peoples together. Recognizing the shared destiny of the Indian sub-continent, we must strengthen connectivity, expand institutional capacity and enhance mutual trust to further regional cooperation. As we make progress in advancing our interests globally, India is also engaged in pro-actively promoting goodwill and prosperity in our immediate neighborhood. It is heartening that the long pending land boundary issue with Bangladesh has been finally resolved.

While we offer our hand willingly in friendship, we cannot stay blind to deliberate acts of provocation and a deteriorating security environment. India is a target of vicious terrorist groups operating from across the borders. Except the language of violence and the cult of evil, these terrorists have no religion and adhere to no ideology. Our neighbors must ensure that their territory is not used by forces inimical to India. Our policy will remain one of zero tolerance for terrorism. We reject any attempt to use terrorism as an instrument of state policy. Infiltration into our territory and attempts to create mayhem will be dealt with a strong hand. .

I pay homage to the martyrs who made the supreme sacrifice of their lives defending India. I salute the courage and heroism of our security forces who are maintaining an eternal vigil to safeguard the territorial integrity of our country and the safety of our people. I also specially commend the brave civilians who boldly detained a hardened terrorist ignoring the risk to their own lives.

(Shri Pranav Mukharjee, the President of India, Address to the Nation on the eve of 69th Independence Day)

उद्धरण को सावधानी से आद्योपांत पढने के उपरांत ऐसा लगता है कि यह किसी भाषण अथवा संबोधन का एक अंश है तथा इसमें देश के समक्ष सुरक्षा, क्षेत्रीय सहयोग एवं बहादुर सैनिकों के योगदान की चर्चा है। **मूल कथ्य यह है कि भारत अपने पड़ोसियों के साथ शांति, सहयोग और क्षेत्रीय सुरक्षा चाहता है, आतंकवाद के प्रति कड़े कदम उठाएगा और अपने साहसी एवं समर्पित बहादुर सैनिकों के प्रति नतमस्तक है।**

Peace, friendship and cooperation bind nations and peoples together. **Recognizing the shared destiny of the Indian sub-continent, we must strengthen connectivity, expand institutional capacity and enhance mutual trust to further regional cooperation.** As we make progress in advancing our interests globally, India is also engaged in pro-actively promoting goodwill and prosperity in our immediate neighborhood. **It is heartening that the long pending land boundary issue with Bangladesh has been finally resolved**

While we offer our hand willingly in friendship, we cannot stay blind to deliberate acts of provocation and a deteriorating security environment. **India is a target of vicious terrorist groups operating from across the borders.** Except the language of violence and the cult of evil, these terrorists have no religion and adhere to no ideology. **Our neighbors must ensure that their territory is not used by forces inimical to India.** Our policy will remain one of zero tolerance for terrorism. We reject any attempt to use terrorism as an instrument of state policy. Infiltration into our territory and attempts to create mayhem will be dealt with a strong hand.

I pay homage to the martyrs who made the supreme sacrifice of their lives defending India. I salute the courage and heroism of our security forces who are maintaining an eternal vigil to safeguard the territorial integrity of our country and the safety of our people. I also specially **commend the brave civilians who boldly detained a hardened terrorist ignoring the risk to their own lives.**

(Shri Pranav Mukharjee, the President of India, Address to the Nation on the eve of 69th Independence Day)

उद्धरण में व्यक्त केंद्रीय विचारों का सूचीकरणः

- उद्धरण महामहिम राष्ट्रपति के राष्ट्र के नाम संबोधन के एक अंश है।
- भारत अपने पड़ोसियों के साथ सहयोग, सुरक्षा एवं परस्पर भरोसे तथा क्षेत्रीय संतुलन के प्रति वचनबद्ध है।
- भारत अपनी प्रगति और आर्थिक निर्भरता का लाभ अपने पड़ोसियों तक पहुँचाना चाहता है।
- इसी नीति के अंतर्गत उसने बंगलादेश के साथ भूमि सीमा सम्बन्धी मुद्दे को भी हल कर लिया है।
- सहयोगात्मक एवं भाईचारे के अपने रवैये के वावजूद भारत पडोसी देशों द्वारा आंतकवाद के प्रोत्साहन को नजरंदाज नहीं कर सकता है।

- आंतकवाद की कोई भाषा अथवा धर्म नहीं होता अतः भारत के पड़ोसियों को अपनी धरती को इस प्रकार की गतिविधियों के प्रयोग से बचना होगा। आतंकवाद के प्रति भारत सख्त कदम उठाने के लिए तैयार है।

दे ा की सुरक्षा और एकता को बनाये रखने के लिए भारत अपने सुरक्षा बलों के साहस और बलिदान के प्रति नतमस्तक है।

सारानुवाद हेतु केंद्रीय कथ्य को यूँ भी प्रस्तुत किया जा सकता हैः

भारतीय उप-महाद्वीप की मुश्किलों के मद्देनजर भारत अपने पड़ोसियों के साथ सहयोग, सुरक्षा और संसाधनों के सहभाजन के लिए वचनबद्ध है। इसी क्रम में उसने हाल ही में बंगलादेश के साथ अपने सीमा विवाद के मुद्दे को भी हल कर लिया है।

दोस्ती की पहल के साथ भारत चाहता है कि उसके पडोसी अपनी भूमि को भारत के खिलाफ आतंकवाद के लिए प्रयोग न होने दें। आतंकवाद का कोई धर्म या भााा नहीं है। घुसपैठ की गतिविधियों से अपनी सीमाओं की सुरक्षा के लिए भारत कड़े कदम उठा सकता है।

देश की सुरक्षा और अखंडता को बनाये रखने के लिए भारत अपने सुरक्षा बालों के साहस एवं बलिदान के प्रति नतमस्तक है।

8.10 सारांश

हमने जाना कि संक्षिप्तानुवाद और सारानुवाद अनुवाद की एक विशेष प्रयोजन विधा है। प्रक्रियात्मक रूप में हम आम तौर पर पहले पाठ का संक्षेपण ही करते हैं। तत्पश्चात् उस सार रूप में संयोजित करते हैं। अतः सारानुवाद अधिक प्रचलन में होने के कारण इसी का अधिकतर प्रयोग होता है। सारानुवाद से क्या अभिप्रेत है तथा इसकी आवश्यकता कहाँ-कहाँ पड़ती है इस पर हमने इस इकाई में विचार किया। मूल पाठ में कथित ''आशय'' अथवा कथ्य को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने के अनेक प्रयोजन हैं। समाचारपत्रों से लेकर पत्रिकाओं और यहाँ तक कि पाठ्यपुस्तकों में भी 'सार' विशेष रूप से प्रस्तुत किया जाता है। रेडियो, टेलीविजन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक एवं कंप्यूटर माध्यमों में समाचारों, वार्ताओं, गोष्ठियों, सम्मेलनों के सार प्रस्तुत किए जाते हैं। सरकारी दफ्तरों संसद तथा न्यायालयों में भी पूरी बात न कहकर 'सार' ही टिप्पणी रूप में प्रस्तुत किया जाता है। संयुक्त राष्ट्रसंघ से लेकर देश की संसद और विधान सभाओं में भी विभिन्न भाषाओं में संपन्न लंबी-लंबी बहसों के सार प्रस्तुत किए जाते हैं। सारानुवाद की अपनी विशिष्टताएँ हैं और इसलिए सारानुवाद करते समय एक चरणबद्ध एवं नियमबद्ध प्रक्रिया अपनाई जाती है। अतः सामान्य अनुवाद से संबद्ध होने के बावजूद इसकी अपनी विधात्मक विशेषता है। चर्चा में यह भी स्पष्ट हो गया कि सारानुवाद केवल स्थिति विशेष अथवा चुनिंदा प्रयोजनों के लिए अनिवार्य तो हो जाता है परंतु इसकी सीमाएँ भी हैं; साहित्य के क्षेत्र में हम लंबी कृति का संक्षेपण मात्र संदर्भ के लिए तो दे सकते हैं; परंतु उसका रसास्वादन सारानुवाद के माध्यम से नहीं कर सकते हैं।

इकाई में हमने यह भी जाना कि सारानुवाद एक चरणबद्ध अनुवाद प्रक्रिया है, जिसमें मूल कथ्य के अर्थ को ठीक से ग्रहण करते हुए पूरे पाठ के किन-किन अंशों को रखना या छोड़ना है इसका निर्णय सावधानी से किया जाता है। पुनः प्रस्तुति के लिए शब्द संयोजन में अतिरिक्त सतर्कता अपेक्षित होता है, जिससे मूल का आशय बना रहे और साथ ही अतिशय वर्णनात्मकता से भी बचा जा सके। सारानुवाद भावानुवाद से भी किन्हीं पक्षों में अलग है, क्योंकि इसमें निर्मित पाठ का आकार-सीमा एवं प्रस्तुति का ध्यान रखना अनिवार्य होता है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सारानुवाद एक विशिष्ट अनुवाद विधा है, जिसका अपना विशेष प्रयोजन, प्रयोजन क्षेत्र और विधात्मक स्वरूप होता है। यह उभरते वैश्विक मामलों की समझ बनाने और समय एवं संसाधनों की कमी को भी पूरा करने का एक विकल्प बन कर उभर रहा है।

8.11 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. सारानुवाद अथवा संक्षिप्तानुवाद को परिभाषित कीजिए तथा स्पष्ट कीजिए कि दोनों एक ही प्रक्रिया के दो चरण हैं।
2. सारानुवाद की आवश्यकता पर विचार कीजिए।
3. सारानुवाद के प्रयोजन-क्षेत्रों का सोदाहरण परिचय दीजिए।
4. सारानुवाद की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों का उल्लेख कीजिए।
5. सरानुवाद के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।
6. सारानुवाद का सामान्य अनुवाद और भावानुवाद के साथ अंतर्भेद स्पष्ट कीजिए।
7. सारानुवाद की सीमाओं और संभावनाओं पर चर्चा कीजिए।

8.12 शब्दावली

सांगोपांग, अन्योक्ति, तारतम्य, अर्थव्यंजना, समतुल्य, पुनःसृजन, संक्षेपण, संसक्ति।

8.13 कुछ उपयोग पुस्तकें

- सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
- कृष्णकुमार गोस्वामी, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
- भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान, दिल्ली : शब्दकार।
- कैलाशचंद्र भाटिया, भारतीय भाषाएँ और हिंदी अनुवाद, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
- रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, एवं कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली : आलेख प्रकाशन।